बी० ए० भाग III

तृतीय प्रश्न-पत्र

प्रश्न – प्रसाद की कथनी कला का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर – छायावादी कवियों में प्रसाद जी का अपना महत्वपूर्ण स्थान है। वे कवि कहानीकार नाटककार, उपन्यासकार और न जाने क्या थे। प्रसाद जी मूलतः प्राचीन भारतीय संस्कृति के पोषक थे। अतएव उनके सम्पूर्ण साहित्य पर आदर्श का रंग चढ़ा हुआ है। यही कारण है कि प्रायः उनकी सभी कहानियों में भावात्मक आदर्श पाया जाता है।

कथावस्तु –

प्रसाद जी की कहानियों की कथावस्तु को तीन भागों में बाँट सकते हैं –

① ऐतिहासिक
② प्रेममूलक
③ यथार्थोन्मुख

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

ऐतिहासिक कथानक –

प्रसाद जी की कहानियों का एक बड़ा भाग ऐतिहासिक है, जिसका कथानक भारतीय इतिहास से लिया गया है। आकाशदीप, पुरस्कार, ममता उनकी सफल ऐतिहासिक कहानियाँ हैं।

प्रेममूलक कहानियाँ –

प्रेम की सहानुभूति कहानियों के सुखान्त-दुःखान्त में सौन्दर्य की अन्तःसलिला की भाँति

परिव्याप्त है। इन प्रेम कहानियों में दुःखान्त कहानियाँ बड़ी मार्मिक हैं।

यथार्थोन्मुखी कहानियाँ —

प्रसाद जी की कुछ कहानियाँ यथार्थ से जुड़ी हैं। इनकी 'ग्राम' 'विराम चिन्ह' 'बेड़ी' आदि कहानियाँ काल्पनिक जीवन के विपरीत यथार्थ का चित्रण करती हैं। ये कहानियाँ बहुत प्रभावशाली हैं।

वातावरण —

वातावरण का प्रयोग प्रसाद जी की कहानियों में सफलतम रूप में हुआ है। कथा-शैली के प्रयोग से यह वातावरण और भी सौन्दर्यपूर्ण हो जाता है। भाषा-प्रयोग भी वातावरण निर्माण में सहायक हुए हैं। कला की दृष्टि से वातावरण प्रधान-कहानियों का महत्व ज्यादा होता है।

कथोपकथन —

पात्रों के पारस्परिक वार्तालाप को ही संवाद या कथोपकथन कहते हैं। संवाद तभी सफल माने जा सकते हैं, जब वे कथा को गति देने वाले हों तथा पात्रों की मानसिकता को स्पष्ट करते हों। नाटकीयता भी संवादों की अपनी विशेषता होती है। प्रसाद जी के संवाद, भाव और प्रसंग पात्रों के अनुकूल हैं।

प्राचार्य
सिरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, इटिया

भाषा-शैली -

कहानी की अभिव्यक्ति भाषा द्वारा ही होती है। अतएव कहानी की भाषा, सरल, आकर्षक एवं सजीव होनी चाहिए। प्रसाद जी की कहानियों में कहीं-कहीं तत्समनिष्ठ, नाटकीय, सार्थक, सूक्ष्म और प्रवाहपूर्ण भाषा के दर्शन होते हैं। नाटक एवं काव्यों की ही भाँति प्रसाद जी की कहानियों की भाषा भी व्याकरण-सम्मत, सुगठित, सरल, शुद्ध एवं प्रवाहपूर्ण है। कहीं-कहीं इनकी भाषा काव्यात्मक हो गयी है, कहीं कहीं पर शब्द-विन्यास अत्यधिक कठिन हो गया है फिर भी कहानी की सजीवता एवं प्रवाह में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आने पाया है।

विशेषता -

प्रसाद जी एक ख्यातिलब्ध कहानीकार हैं। स्वच्छन्दतावादी कहानियों के समारम्भकर्त्ता भी प्रसाद जी ही माने जाते हैं। इसी कारण आपकी कहानियों का रूप-शिल्प प्रेमचन्द से बहुत कुछ भिन्न हो गया है। नाटकीयता उनकी भाषा का एक विशेष गुण है।

निष्कर्ष -

इसप्रकार प्रसाद जी के कथा-साहित्य का उनके परवर्ती

कहानीकारों पर विशेष प्रभाव पड़ा है। प्रसाद जी की कहानियों में जहाँ एक ओर अतीत की झलक और भाव - विशिष्ट काल्पनिक सौन्दर्य - सृष्टि मिलती है, वहीं दूसरी ओर जीवन की वास्तविकता का व्यंजनात्मक चित्र भी मिलता है।

01/10/2020

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया